ॐ

उर्मिला

(लघु नाटक)

अशोक कुमार श्रीवास्तव

<a_kumar7@rediffmailcom>

अशोक कुमार श्रीवास्तव के बारे में :

शार्ट फिल्म मेकर;

फिल्म इंस्टिट्यूट,पुणे तथा माईका अहमदाबाद में रहे फिल्म/टी वी और मीडिया के प्रोफेसर;

हिंदी/उर्दू भाषाओँ के लेखक/कवि ।

पता : ९१९,बी-५, आशिआना टाउन, भिवाड़ी, ३०१०१८   एन, सी, आर,

यह नाटक

मोहिनी एकदशी, सम्वत २०७९ को सम्पूर्ण हुआ।

(१२ मई, २०२२)

आवरण चित्र :

Royalty free abstract drawing curtsey- Template.net

श्रीमती जनक कुमारी जी
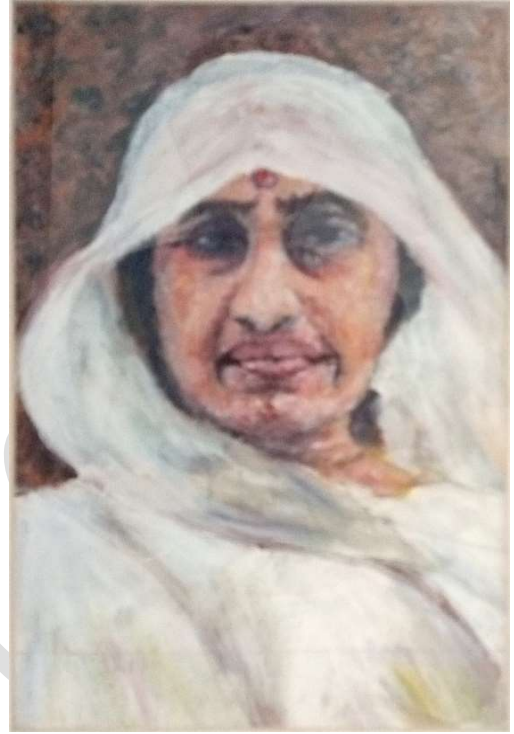
श्रीमती विद्या देवी जी

यह नाटक

अपनी दादी श्रीमती जनक कुमारी जी

और अपनी माँ श्रीमती विद्या देवी जी

के चरणों में सादर समर्पित !

(दादी और मम्मी दोनों की यह पैंटिंग्स अपने बड़े भाई अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्टिस्ट स्वर्गीय डाक्टर श्री नैनी कुमार के सौजन्य से !)

अपनी बात

रामायण हो या महभारत इनके पात्रों का जीवन संघर्षों ,त्रासदियों, तकलीफों से भरा हुआ है। राम को राजकुमार होते हुए भी पत्थरों पर शयन करना पड़ा ,जंगलों जंगलों भटकना पड़ा। सीता को पतिव्रत धर्म निभाते वनवास स्वीकार कर राक्षसों के बीच रह कर ,फिर गृह निष्कासित हो कर अश्रुपूर्ण जीवन जीना पड़ा। लक्ष्मण ने भ्रात्र धर्म निबाहते हुए चौदह साल जाग्रत रह कर भाई भाभी की सेवा और रक्षा में व्यतीत किये। कृष्ण का तो पैदा होते साथ ही राक्षसों से सामना होता रहा और इंद्र के अहंकार के कारण गोवर्धन पर्वत उठा कर उन्हें गौओं और मानवों की रक्षा करनी पड़ी। रास भी उन्होंने वेद ऋचाओं को बल देने हेतु रचाई। इनके और इन जैसे तमाम पात्रों के बारे में लोगों को या तो मालूम है या बहुत कुछ लिखा -सुना जा चुका है लेकिन रामायण का एक पात्र -मुझे लगता हैकि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से -उपेक्षित है। उसे उसका श्रेय नहीं मिला है। उस पर लोगों का ध्यान भी नहीं गया है और वह है लक्ष्मण पत्नी उर्मिला। उसके चौदह सालों के 'फोर्स्ड' वियोग, विरह और सेवा के जीवन का उल्लेख कोई ख़ास नहीं है। उर्मिला के त्याग ,बलिदान, 'साइलेंट सफ्रिंग '   और इंतज़ार के प्रति मेरे मन में जो उत्सुकता,उत्कंठा और श्रद्धा थी वह बहुत दिनों तक उथल पुथल मचाती रही। मैं ने कई उपरोक्त पात्रों के बारे में अपनी भावनाओं और 'कंसर्नस'   को अपनी कविताओं में व्यक्त किया है लेकिन उर्मिला के बहुआयमी चरित्र को कविता के कुछ छंदों में व्यक्त करना नामुमकिन लगा। उस तरह न उसके साथ न्याय हो सकता था न उसकी व्याख्या हो सकती थी। उपन्यास लिखने का भी सोचा पर इस पात्र के लिए वह विधा भी मुझे उपयुक्त नहीं लगी। तब लगा इस पात्र को जीवंत करने के लिए नाटक ही सही रहेगा। यह नाटक वल्मीकि रामायण से और जहाँ जहाँ से भी कोई जानकारी मिली उस पर आधारित है और क्योंकि ज़्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी इसलिए यह नाटक अधिकतर काल्पनिक है। यह नाटक लक्ष्मण पत्नी के लिए मेरी आदरांजलि है। यदि मैं इस चित्रण में कोई ग़लती कर रहा होऊं तो उनकी आत्मा मुझे क्षमा करे । मेरा इरादा उनके साथ अन्याय करना नहीं है न उनका उपहास करना है। यह नाटक उनके प्रति मेरी श्रद्धा और ह्रदय से उनके संताप को महसूस करने-और लोगों तक पहुँचाने -का एक अदना प्रयोग है।

सही हिंदी जानने/पढ़ने वालों को कहीं कहीं इसमें इमले/हिज्जे की त्रुटियां दिखेंगीं जिनके लिए मैं क्षमा मांगता हूँ लेकिन वो कम्प्यूटर (ईज़ीहिंदी,कॉम) की मेहरबानियां हैं ! आशा है यह नाटक   पढ़ने वालों को, मंचन करने वालों को, दर्शकों को पसंद आए तथा उर्मिला जी के बारे में उन्हें सोचने पर विवश करे । इसी भावना के साथ- "उर्मिला"!

- अशोक कुमार

भूमिका

राजा जनक के दो पुत्रियां थीं -एक जो हल जोतते समय उन्हें धरती की कोखसे प्राप्त हुई - सीता और दूसरी उनकी तथा पत्नी सुनयना की स्वयं जनित बेटी-उर्मिला। इन दोनों के साथ जनक जी के छोटे भाई कुशाध्वज तथा उनकी पत्नी चंद्रभागा की दो पुत्रियां थीं- मांडवी और श्रुतिकीर्ति। चारों एक साथ बड़ी हुईं। राम ने जब स्वयंवर में शिव जी का धनुष तोड़ दिया और सीता का विवाह राम के साथ होना तय हुआ तब राजा दशरथ के चारों पुत्रों- राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का विवाह भी जनक जी के परिवार की ही इन चार कन्याओं के साथ हो गया। सीता का राम से,मांडवी का भरत से,उर्मिला का लक्ष्मण से और श्रुतिकीर्ति का शत्रुघ्न से। विवाह का उल्ल्हास और उमंग ढलते ही राजा दशरथ ने राजपद से निवृत्ति हेतु राम का राजयभिषेक करना निश्चित किया। राम को राज्याभिषेक की सुबह ही वनवास का आदेश हुआ जिसमें सीता जी और लक्ष्मण उनके साथ चले। भरत और शत्रुघ्न उस समय अपने मामा के घर पर थे इसलिए उन्हें ये समाचार लौटने के बाद मिला। यह वृतांत सबने सुना है। लेकिन रामायण का जो सबसे अ-लिखित ,कम- विदित पात्र है वह है लक्ष्मण पत्नी उर्मिला। उर्मिला -जो अपने पति लक्ष्मण केचौदहवर्षों के वनवास को अकेले कैसे और कितना झेल गयी। यह नाट्य-गाथा उसी उर्मिला पर आधारित है। जहाँ हो सका वाल्मीकि रामायण से और जो जो मैटेरियल जहाँ जहाँ से भी मिल सका उस का सहारा ले कर मैं ने इसे गूंथने का प्रयत्न किया है मगर क्योंकि अधिक मैटेरियल उपलब्ध नहीं है इसलिए ज़्यादातर यह नाटक कल्पना पर ही आधारित है। यह मेरा एक अदना साहित्यिक प्रयास है और इसलिए यह नाटक किसी भी दृष्टि से कम्पलीट नहीं कहा जा सकता, इसमें तमाम कमियां हो सकती है। ज्ञानी जन कृपया मुझे उन से अवगत करायें ताकि मैं उन कमियों को दूर कर के इस नाटक को बेहतर बना सकूं।

-अशोक कुमार

नाटक -'उर्मिला' :

परदा धीरे धीरेखुलता है , स्टेज पर लाइट्स आती हैं। वसंत ऋतू,हल्का मद्दम आनंद दायक संगीत,फुलवारी, छोटे छोटे फव्वारे ,प्रातः काल का सूर्या प्रकाश ,चिड़ियों की चहचहाट इत्यादि। अठखेलियां करती सीता और उर्मिला स्टेज पर प्रकट होती हैं। सीता तितलियों को देखती,पकड़ने की कोशिश करती हुई। उर्मिला फूलों की नैसर्गिकता का और कुछ कुछ सुगंध का आनन्द लेती हुई। दोनों आपस में बातें करते हुए।

उर्मिला - गुरु जी की एक बात मेरी समझ में नहीं आयी।

सीता - क्या ?

उर्मिला -वो कहते हैं सारी शृष्टि का स्त्रोत्र एक ही शक्ति है। याने वन सम्पदा- वनस्पति भी वही और प्राणी भी वही।

सीता - तो?

उर्मिला - तो फिर प्रकृति और मानव के स्वभाव में इतना अंतर क्यों ? प्रकृति सर्वजन- हिताय है जबकि जीव जंतु मानव सब स्वयं- हिताय हैं।

सीता - गुरु जी ने बताया नहीं कि ये सारी विकृति मन जनित है,,,,स्वभाव जनित,,वासना जनित ,,और वासना प्रकृति में नहीं है। प्रकृति शुद्ध है।

उर्मिला - कितना सुखद होता यदि प्राणी मात्र , कम से कम- मानव तो, वासना रहित,स्वार्थ रहित हो सकता,,,

(सीता एक और तितली पकड़ने जाती है। तितली उड़ जाती है; वह उसके पीछे दौड़ती है)

सीता -(उकता कर)- फिर उड़ गयी !

उर्मिला - छोडो उसे,,,क्यों स्वच्छन्द आत्मा को बंदी बनाना चाहती हो,,पकड़ कर क्या करोगी ,,,

सीता - छोड़ दूँगी,,,पर एक बार ध्यान से देखूं तो कि इसके उड़ने और बगिया में इसके चक्कर लगाने का प्रयोजन क्या है।

उर्मिला - इसका कोई प्रयोजन नहीं हो सकता,,,

सीता - कुछ तो होगा । इस सृष्टि में बिना प्रयोजन कुछ नहीं है।

(सीता फिर उचक कर तितली पकड़ने जाती है। तितली उड़ जाती है। एक अधेड़ महिला की हंसी पहले आती है उसके बाद वह बोलते हुए स्टेज पर आती है- ऐसे जैसे वह वहां बाग़ की देख भाल के लिए है)

महिला -(सीता के तितली न पकड़ पाने पर हंसती है),,देखो,,, देखो,,, संभल के !

सीता - मैं क्या करूँ वो बढ़े ही जा रही है ,,,,,ज़रा रूकती है फिर उड़ जाती है।

महिला- वो तितली है,,,तुम्हारी छोटी बहन उर्मिला थोड़े ही है जो तुम्हारे कहे पर चले।

सीता - क्यों उर्मिला ? ऐसा है क्या ? तुम मेरे कहे पर चलती हो ?

उर्मिला - दीदी माँ आदरणीय हैं,,,उनकी कही बात मैं कैसे काट सकती हूँ !

सीता -याने ये सच है !

उर्मिला - सच तो यह है कि मैं तुम्हारे कहे पर नहीं तुम्हारे छोड़े हुए पैरों के निशानों पर चलती हूँ।

महिला - देखा,,,मैं ने क्या कहा,,,

सीता - किसी दूसरे के पैरों के निशानों पर पैर रख कर नहीं चलना चाहिए । हर एक का पथ निर्धारित होता है, हर एक का प्रारब्ध, हर एक की यात्रा, हर एक का गंतव्य , हर एक का,,,,

उर्मिला - (बात काट कर) बस बस,,,जो अलग हैं उनका होगा,,हम अलग नहीं हैं और हमारा कुछ भी अलग नहीं है,,सब एक है,,,,,चलो मैं तुम्हारे लिए तितली पकड़ देती हूँ।

महिला - तोअब तुम भी भगोगी तितली के पीछे।

उर्मिला - इस भागने में बड़ा मज़ा आता है दीदी माँ ,,तुम भी आ जाओ , मिल के भागते हैं,,,हं हं हं हं,,,

महिला - तितलियों के पीछे !

सीता - तितलियों के पीछे !

(भागते हुए सीता और उर्मिला स्टेज से एग्जिट कर जाती हैं। उनके पीछे महिला भी। लाइट्स फैड आउट होती हैं। परदे बंद होते हैं। कुछ देर ख़ामोशी)

(हल्के संगीत के साथ वैदिक उच्चारण में वाल्मीकि रामायण के निम्न लिखित श्लोक पुरुष/महिला मिश्रित कंठ में रिवर्ब के साथ उच्चारित होते है)

दिव्यन्तरिक्षे भूमौ च घोरमुत्पातजं भयम्।
संचचक्षेऽथ मेधावी शरीरे चात्मनो जराम् ॥ ४३ ॥

बुद्धिमान् महाराज दशरथने मन्त्रीको स्वर्ग, अन्तरिक्ष तथा भूतलमें दृष्टिगोचर होनेवाले उत्पातोंका घोर भय सूचित किया और अपने शरीरमें वृद्धावस्थाके आगमनकी भी बात बतायी ॥ ४३ ॥

पूर्णचन्द्राननस्याथ शोकापनुदमात्मनः।
लोके रामस्य बुबुधे सम्प्रियत्वं महात्मनः ॥ ४४ ॥

पूर्ण चन्द्रमाके समान मनोहर मुखवाले महात्मा श्रीराम समस्त प्रजाके प्रिय थे। लोकमें उनका सर्वप्रिय होना राजाके अपने आन्तरिक शोकको दूर करनेवाला था, इस बातको राजाने अच्छी तरह समझा ॥ ४४ ॥

आत्मनश्च प्रजानां च श्रेयसे च प्रियेण च।
प्राप्ते काले स धर्मात्मा भक्त्या त्वरितवान् नृपः ॥ ४५ ॥

तदनन्तर उपयुक्त समय आनेपर धर्मात्मा राजा दशरथने अपने और प्रजाके कल्याणके लिये मन्त्रियोंको श्रीरामके राज्याभिषेकके लिये शीघ्र तैयारी करनेकी आज्ञा दी। इस उतावलीमें उनके हृदयका प्रेम और प्रजाका अनुराग भी कारण था ॥ ४५ ॥

नानानगरवास्तव्यान् पृथग्जानपदानपि।
समानिनाय मेदिन्यां प्रधानान् पृथिवीपतिः ॥ ४६ ॥

उन भूपालने भिन्न-भिन्न नगरोंमें निवास करनेवाले प्रधान-प्रधान पुरुषों तथा अन्य जनपदोंके सामन्त राजाओंको भी मन्त्रियोंद्वारा अयोध्यामें बुलवा लिया ॥ ४६ ॥

(वौइस् ओवर शुरू होता है -ऐसे जैसे आवाज़ समुद्र पार अंतरिक्ष से आ रही हो। आवाज़ मर्दाना है लेकिन ऑथॉरिटेटिव नहीं है और उसमें बेस का ख़ास रोल नहीं है)

वौइस् ओवर - समयानुसार सीता का विवाह राम जी के साथ और उर्मिला का विवाह राम के लघुभ्राता ,शेषनाग के अवतार लक्ष्मण जी के साथ हो गया और उनकी छोटी बहनों मांडवी और श्रुतिकीर्ति का भरत और शत्रुघन के साथ। पिता महाराज दशरथ की प्रसन्नता और अयोध्या के जनमानस की आशाएं आकाश छूने लगीं । पर पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से कौन बचा है - फिर चाहे वह प्रसन्नता हो आशा हो या कुछऔर ! चाहे आस्मान छू कर ही सही मगर धराशाई सबको होना है।

(वौइस् ओवर शुरू होता है बग़ैर संगीत के लेकिन जैसे जैसे ये बढ़ता जाता है एक हल्का सा संगीत -सारंगी या वायलिन जैसा -ऐसा जो ध्यान से न सुनो तो सुनाई ही न दे- शुरू होता है जो वौइस् ओवर समाप्त होते होते,तेज़ नहीं होता मगर, साफ़ सुनाई देता है और वौइस् ओवर समाप्त होने के बाद क़रीब दस सेकंड तक जारी रहता है। इस संगीत के साथ मिक्स होते हैं वाल्मीकि रामायण के दो छंद संस्कृत भाषा में गाए हुए -एक दम धीमे ,मद्दम सुर में बहुत मृदु लय में ।

साउंड इफ़ेक्ट - जैसे दूर यहीं आस्मान में बिजली कड़कड़ा रही हो, विज़ुअल में उसी टाइम लैप्स से बिजली बंद पर्दों पर चमक जाती है। श्लोक बैकग्राउंड में चल रहे हैं। फिर सब एक ईको वाले संगीत में मिक्स होता है- ऐसा जैसे शताब्दियों पीछे ले जाने की बात की जा रही हो।

इसी ईको म्यूजिक पर धीरे धीरे पर्दा खुलता है। बिजली भी एक आध बार कड़कती है। स्टेज अँधेरा है और उस पर धुआं धुआं भरा है- फिर अँधेरा कम होता जाता है और धुंए पर सफ़ेद रौशनी ,फिर बैंगनी रौशनी और फिर केसरी रौशनी रंग जाती है। धुआं फिर अचानक- संगीत के क्रॉस फेड के साथ- साफ़ हो जाता है और मृदंग के बीट और बहुत मनभावन संगीत केसाथ दोनों दिशाओं से तमाम प्रसन्न नृत्यांगनाएं आकर स्टेज कवर कर लेती हैं। फिर वे नृत्य करते करते स्टेज के पीछे की और होती जाती हैं और वे एक प्लेटफार्म पर बैठी हुई उर्मिला को स्टेज के फ्रंट में ले आती हैं और उर्मिला को साथ ले कर नाचने लगती हैं।

क्रॉस फेड - आते हुए जूतों के चर्र मर्र कीआवाज़ -एडवांसिंग म्यूज़िक के साथ - जैसे कोई बादशाह आ रहा है।

(नृत्य करती लड़कियां रियेक्ट करती हैं ,उनके कान आवाज़ पर लगते हैं और डांस मूवमेंट्स हल्के होने लगते हैं।)

अनाउंसमेंट वॉइस ओवर -सावधान ! सावधान ! चक्रवर्ती महाराज दशरथ के ज्येष्ठ सुपुत्र राज्य उत्तराधिकारी युवराज राघव के कनिष्ठ भ्राता महाराज लक्ष्मण भवन में पधार रहे हैं !

उर्मिला दरवाज़े की ओर देख कर बेचैनी से उधर जाने को उद्दत होती है।

नाचने वाली लड़कियां मुंह छुपा कर हंसी रोकती हैं। उर्मिला ज़रा सा मुस्कुराती है, लज्जा से सर का पल्लू ठीक करती है और जिस दिशा से आवाज़ आई है उसी दिशा में अग्रसर होती है। नाचने वालीलड़कियाँ नाचते नाचते स्टेज से निकल जाती हैं। सारा सीक्वेंस कोरेग्राफी में।

म्यूज़िक बदलता है। रौशनी एकदम साफ़ सफ़ेद और ऐसी जैसेकोई खुशनुमा सवेरा हो- ऐसी हो जाती है। साउंड इफ़ेक्ट के साथ लक्ष्मण दूर से एंटर करते हैं। उर्मिला गुनगुनाते हुए मदमाती चाल में उनके पास जाती है।)

उर्मिला - (खुश है) -आओ, आओ, बस मैं तुम्हारा ही सोच रही थी (लक्ष्मण का सवालिया चेहरा),,क्यों ? आज तुम्हारी मनोकामना पूरी हुई न !

लक्ष्मण - याने ?

उर्मिला- यही कि श्वसुर महाराजा धिराज दशरथ तुम्हारे सबसे प्रिय वरिष्ठ भाई राम का राज्याभिषेक करने जा रहे हैं। प्रजा में देखो कितना उत्साह है। सारा अयोध्या कितना आल्हादित है। चारों ओर संगीत है। पक्षी गुनगुना रहे हैं,पेड़ पौधे झूम रहे हैं और दिशाएं उत्सव मना रही हैं !

लक्ष्मण - (कंसर्नड टोन में) उर्मि ,,,

उर्मिला -देखो न,,मैं भी सोच रही हूँ कि क्या पहनूं , कितना सजूं, किस प्रकार जाकर बहन सीता से मिलूं ,,,,,उसे शब्दों में कैसे बधाइयाँ दूँ,,,आज मेरी बहन अयोध्या की महारानी हो जाएगी ,,,!

(अचानक लक्ष्मण की ओर देखते हुए),,अरे, लेकिन तुम ऐसे कैसे खड़े हो,,तुम भी कुछअच्छा पहनो,,कपडे, आभूषण,,,,लाओ मैं निकाल देती हूँ,,,

लक्ष्मण -देखो,,,,तुम,,,

उर्मिला - ठीक है,,,तुम अपने कपड़े दासीसे कह कर स्वयं निकलवाना,,,मैं तो अपने पहनने के लिए देखूं,,(चलने को होती है)

लक्ष्मण - वो सब रहने दो उर्मिला !

उर्मिला -(नाराज़ सा होते हुए) रहने दो ?,,क्या मतलब रहने दो?!,,मैं ओर सीता एक साथ बड़े हुए हैं। एक ही पिता की पुत्रियां हैं। एक ही वातावरण में खेले हैं। हम दो होंगे पर हैं तो एक ही प्राण। हमारे सुख भी एक हैं,

हमारे दुःख भी एक हैं। हम एक दूसरे के लिए तो जैसे पैदा हुए है। भाग्य ने हम दोनों के साथ जितना न्याय करसकता था किया है।

लक्ष्मण - (रेज़ाइन होकर बैठते हुए , संजीदा हो कर) तुम्हारे और सीता मैया के भाग्य में बहुत अंतर है उर्मिला !

उर्मिला - अंतर है न ! वो धरती माँ की गोद से उत्पन्न मेरी बरिष्ठ हैं ,राघव की पत्नी हो कर पूजनीय हैं और मैं,,,मैं तुम्हारी जीवन संगिनी हो कर कृतार्थ हूँ।

(सोच कर) लेकिन तुम यहाँ क्यों समय बर्बाद कर रहे हो ? और इस प्रसन्नता की घड़ी में तुम्हारे मुख मंडल पर उमंग और आल्हाद जैसा कुछ क्यों नहीं है ?,,चलो तुम भी तैयार हो जाओ, सुगंधों से स्नान करो,,चलो राम जी के महल में चलें,,ताकि राज्याभिषेक से पूर्व हम ही सबसे पहले उन्हें बधाई दें ! चलो,,,,चलो,,,

(व्यस्त होने लगती है)

लक्ष्मण - (लम्बी सांस ले कर) ,,,ठहरो !

उर्मिला - (रूकती है, मुड़ कर सवाल करती है),,,ठहरो ?,,,,(जैसे समझाते हुए) क्यों देर करते हो।

लक्ष्मण - इधर आओ,,,बैठो ,,,,

उर्मिला - उँह हूँ ! कितनी मेरी सूरत देखोगे ,,,, कितनी मेरी प्रशंसा करोगे,,,चलो,,,हटो,,बहुत हुआ तुम्हारा दुलार,,,समय बर्बाद न करो ,,तैयार हो,,,चलो,,,,

लक्ष्मण -(पकड़ कर बैठाता है) बैठो तो !

उर्मिला - (हार कर बैठते हुए),,अब क्या ?

लक्ष्मण -विधना के विधान को कौन जान सकता है !

उर्मिला - जान क्यों नहीं सकता,,,विधना का विधान एकदम स्पष्ट है। राम वरिष्ठ भ्राता हैं राजगद्दी उन्हें ही मिलनी थी। आज न मिलती कल मिलती,,पिता श्री ने ठीक ही किया जो उत्तराधिकारी की घोषणा कर दी। राज्याभिषेक भी कर रहे हैं। हाँ, यदि भरत और शत्रुघ्न भी आ जाते तो और अच्छा होता,,मगर मुहूर्त तो किसी की प्रतीक्षा नहीं करता,,,,क्या किया जाये !

लक्ष्मण - मुहूर्त भी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता और समय कब पलट जाये इसका भी कोई ठिकाना नहीं है।

उर्मिला - सम्राट दशरथ की आज्ञा ,जीजा राम के प्रारब्ध ,सीता के सुकर्मों के फल और अयोध्या वासियों की आशाओं को पलट देने में समय चक्र भी सक्षम नहीं है सुमित्रा नंदन,,,,!

लक्ष्मण - ऐसा हमारा विश्वास है !

उर्मिला - अटल विश्वास !

लक्ष्मण - मत भूलो कि सब अनुकूल होने पर भी अनजाने में दी गयी अभक्ष्य की एक आहुति भी यज्ञ के फल का ह्रास कर देती है।

उर्मिला - (कंसर्नड हो कर) ऐसी शुभ घड़ी में ये अभक्ष्य ,विधना,समय पलटना,,,क्या क्या और कैसी कैसी अशुभ बातें करे जा रहे हैं आप !

लक्ष्मण - मेरा तत्पर्य है कि जो हम समझ बैठे होते हैं कभी कभी उससे उलट भी फलित होता है।

उर्मिला - आज के सन्दर्भ में इसका मतलब ?

लक्ष्मण - तुम राज्याभिषेक पर प्रसन्न हो रही हो न,,,,

उर्मिला - तो?

लक्ष्मण - राज्याभिषेक टल गया उर्मिला !

उर्मिला - टल गया मतलब?

लक्ष्मण - अब राम का राज्याभिषेक आज नहीं हो रहा है।

उर्मिला - क्यों, क्या मुहूर्त निकलने में चूक हुई या भरत और शत्रुघ्न के बिना राम राजतिलक नहीं करवा रहे हैं ?

लक्ष्मण - हं हं हं हं,,,इससे अधिक तुम्हारा निर्मल ह्रदय कुछ सोच भी नहीं पायेगा ! हं हं हं,,,

उर्मिला - तुम अपनी हंसी करने की आदतें छोड़ दो लक्ष्मण श्रेष्ठ ।

लक्ष्मण - इस समय मैं हंस नहीं रहा हूँ,रो रहा हूँ !

उर्मिला - (बैठती है,हाथ लक्ष्मण के कंधे पर रख कर बोलती है) रो रहे हो ? ऐसे समय में ? कैसे छोटे भाई हो तुम ?

लक्ष्मण - मैं सच कह रहा हूँ,,,राम का राज्याभिषेक टल गया है। उन्हें वन-गमन आदेश हुआ है।

उर्मिला -(तक़रीबन झटका खा कर उठती है) वन-गमन आदेश ! क्यों? किसने दिया ? एक राजकुमार को वन -गमन ?,,,विधना को भी क्या अयोध्या के भाग्य से ईर्ष्या होने लगी है ?!

लक्ष्मण - मैं ने तुमसे क्या कहा ,,,समय कब पलट जाये इसका कोई ठिकाना नहीं है।

उर्मिला - (दुखी हो कर) अप्रत्याशित !,,,राज कुमार राम,,,वन में,,, ! हे प्रभु !,,ये कैसी माया है ?,,,,(सोच कर),,,ये वन गमन आदेश है किसका ?राजाधिराज दशरथ तो ऐसा आदेश दे नहीं सकते।,,,, और और किसी की बात मानने के लिए राम जी बाध्य नहीं हैं।

लक्ष्मण - आदेश तो महाराज दशरथ का ही है।

उर्मिला - (आश्चर्य से) आदेश महराज दशरथ का है !! (कटाक्ष की हंसी के साथ) क्या विडम्बना है ,,,कल रात को राज्याभिषेक की घोषणा और आज भोर में वन-गमन आदेश ! ये विक्षिप्तता है, राजनीति है,दबाव है या किसी ऋण को चुकाने के लिए है,,,,,ये क्या बात है ?

लक्ष्मण -(खड़ा हो कर टहलता है,हाथ पीछे बांध कर,धीरे धीरे ,,,फिर धीमी आवाज़ में बोलता है) कभी कभी कुछ वचन जो हम दे देते हैं,,वे समय के साथ साथ जन्मों जन्मों के ऋणों से भी भारी हो जाते हैं।

उर्मिला - महाराज चक्रवर्ती हैं। वे देते हैं,,लेते कभी किसी से कुछनहीं,,,तो फिर उन्होंने किससे ऋण लिया? किस को ऐसा वचन दिया जो उन पर जन्मों के ऋणों से भी भरी पड़ गया?

लक्ष्मण - माता कैकेयी।

उर्मिला - (घोर अचम्भे से झटका सा खा कर) माता कैकेयी !,,,वो तो तुम्हें और राम को जान से अधिक प्यार करती हैं,राजाधिराज के चरणों में ध्यान रखती हैं तब उन कौन सा ऋण और राजा का कौन सा वचन ? पहेलियाँ मत बुझाओ,,,ठीक ठीक बताओ,,,

लक्ष्मण - कभी माता कैकेयी नेअपनी ऊँगली राजा दशरथ के रथ में लगा कर रणमें उनकी जान बचाई थी तो राजा ने वचन दिया था कि इसके लिए जो चाओ माँग लेना,,,,,,तो माता कैकेयी ने आज माँग लिया ! राजा दशरथ मना नहीं कर पाए,उनकी नैतिकता आड़े आ गयी और कैकेयी माता अड़ गयीं।

उर्मिला - राजा चाहते तो इसे टाल तो सकते थे।

लक्ष्मण - रघुकुल की रीति है कि दिए हुए वचन कि पूर्ति अवश्य होनी चाहिए ,,, प्राण भले ही चले जाएँ !

उर्मिला - और माता ने राम का वन वास माँगा ?

लक्ष्मण - और अपने पुत्र भरत का राज्याभिषेक !

उर्मिला - (डिस्गस्ट में , सोचते हुए बोलते हुए) एक माँ बेटे कोजंगलों में भटकने,भयानक जीव जंतुओं के सानिध्य में जीने का आदेश दे सकती है यह पहली बार सुना,,,,प्यार तो राम पर उनका बहुत दिखता था,,,मन में क्या सौतेला पन था किसको पता था,,,,(पॉज) उनका बेटा तो भरत है न !,,,और अपना बेटा ही असली बेटा होता है !,,,, चलो रघुकुल के इतिहास में ये पल भी दर्ज रहेगा !,,,अद्भुत ! (पॉज) ,,,,अच्छा,,,तो राम वनवास के लिए कब प्रस्थान करेंगे ?

लक्ष्मण - आज ही !

उर्मिला - बेचारी सीता !

लक्ष्मण - वे भी साथ में जा रही हैं।

उर्मिला - साथ में? क्यों? कब तक के लिए?

लक्ष्मण - राम के साथ ही,,,,चौदह वर्षों के लिए !

उर्मिला - चौदह वर्षों के लिए !!,,अरे लेकिन सीता जा ही क्यों रही हैं,,क्या उन्हें भी अरण्य जीवन का आदेश मिला है ?

लक्ष्मण - वे अपना पतिव्रत धर्म निभाना चाहती हैं।

उर्मिला - ओह !,,,तो चलो उन्हें मिल कर आते हैं।

लक्ष्मण - (सहमते हुए),,,मैं ,,,,,उर्मिला,,,,

उर्मिला - (लक्ष्मण को देख कर विस्मय से),,क्या ?

लक्ष्मण - मैं उनके साथ जा रहा हूँ !

उर्मिला - साथ जा रहे हो ? तुम ? क्यों ?

लक्ष्मण - उन्हें चौदह वर्ष का वनवास हुआ है।

उर्मिला- चौदह वर्ष !! ,,,मगर तुम क्यों जा रहे हो? कब तक साथ रहोगे ?

लक्ष्मण - चौदह वर्ष !

उर्मिला - चौदहों वर्ष ! तुम उनके साथ वन में रहोगे ? क्या तुम्हें भी वन गमन आदेश हुआ है ?

लक्ष्मण - नहीं।

उर्मिला - तो फिर ? तुम क्यों जा रहे हो ?

लक्ष्मण - भ्राता राम को वहां कौन देखेगा ?

उर्मिला - देखेगा मतलब? उन्हें यहाँ कौन देखता था ? यहाँ क्या उन्हें तुम देखते थे ? क्या वे उम्र में इतने छोटे हैं कि उन्हें किसी के देख भाल की आवश्यकता है या तुम उम्र में उनसे इतने बड़े हो कि तुम उनकी देखभाल अधिक अच्छी तरह कर सकते हो ?

लक्ष्मण - बात वो नहीं है I बात यह है कि राम वन जा रहे हैं,,,वहां प्रकार प्रकार के ख़तरनाक जनवर होंगे ,काँटेदार भयाक्रान्तक पेड़,पक्षी और राक्षस होंगे I कंकर पत्थर पर चलना पहुडना होगा,,,ऐसे में किसी न किसी के सहारे - साथ की आवश्यकता तो होती ही है न,,!

उर्मिला - तुमने तो कहा सीता दीदी उनके साथ जा रही हैं !

लक्ष्मण - हाँ !

उर्मिला - तुम्हारा क्या मतलब है सीता उनकी देखभाल नहीं कर सकतीं,,,,तुमउनसे अच्छी प्रकार राम की देखभाल कर सकते हो ?

लक्ष्मण - मतलब मत निकालो।

उर्मिला - अच्छा और इस सब के बीच तुम्हारी देखभाल कौन करेगा ?

लक्ष्मण - मुझे देखभाल की क्या अवश्यकता है?

उर्मिला - (कटाक्ष करते हुए) और राम को है ?,,,,ठीक है,,,तो मैं भी चलूंगी तुम्हारे साथ।

लक्ष्मण - नहीं नहीं,,

उर्मिला - क्यों ? जब सीता राम के साथ जा सकती हैं। अपना पतिव्रत धर्म निभा सकती हैं तो मैं तुम्हारे साथ जाकर अपना पतिव्रत धर्म क्यों नहीं निभा सकती ?

लक्ष्मण - तो यहाँ माता कौशल्या और पिता राजा दशरथ को कौन देखेगा ?

उर्मिला - मैं न होती तब भी तो उन्हें कोई देखता ही न ,,,,

लक्ष्मण- लेकिन अब तुम हो।

उर्मिला - ठीक ठीक कहो,,,तुम्हारा अकेले वन में जाने का प्रोयोजन क्या है ? क्या तुम्हारा मन अब नई नई वन कन्याओं की सुगंध से प्रफुल्लित होने को आतुर हो रहा है? क्या तुम्हें अब उर्मिला के प्रेम,प्रणय,संसर्ग और दुलार से ,,,

लक्ष्मण- (बात काट कर) ये क्या कह रही हो उर्मिला ! क्या मैं कभी ऐसा करना तो छोड़ो, सोच भी सकता हूँ? क्या अब तक तुम मुझे केवल इतना हो समझ पाई हो ?

उर्मिला - चौदह वर्ष मैं अकेले यहाँ नहीं रह सकती,,,वन मैं भी चलूंगी ,,,,वहां मेरी बहन सीता भी होगी, तुम भी होगे,,,फिर वन हो,राजमहल हो क्या अंतर पड़ता है !

(मेलेन्कोलिक संगीत जो धीरे धीरे बढ़ता है और क्रेसेंडो पर पहुँचता है। उसी के साथ उर्मिला धीरे धीरे रुंआसी होती है और फिर तेज़ रोने लगती है। फिर संगीत ज़रा कम होता है,रोना भी कम होता है, उर्मिला बीच बीच में कभी कभी हिचकी लेते/ सिसकते बोलती है)

तुम्हें वन गमन आदेश नहीं है फिर भी तुम वन जा रहे हो ,सीता दीदी को वन गमन आदेश नहीं है फिर भी वो वन जा रही हैं,,,वो अपना पतिव्रत धर्म निभा रही हैं, तुम अपना भ्रात्र धर्म निभा रहे हो,,,एक मैं ही हूँ जिसका कोई धर्म नहीं है ! क्या मुझसे इक्ष्वाकु कुल के परिवार का अंग होने का सौभाग्य छीना जा रहा है ? (अब रोना बंद कर के ,स्वयं से जैसे नाराज़ होते हुए)

क्या इतिहास मुझे एक नगण्य ,बेकार और धर्मच्युत स्त्री के रूप में याद करेगा ? क्या रघुकुल की स्त्रियों में मेरा कोई स्थान नहीं है ?

क्या मेरी भावनाओं को समझने वाला कोई भी यहाँ नहीं है? तुम भी नहीं ? (थोड़ा पास जा कर,आँखों में आँखें डाल कर) तुम तो ऐसे न थे ,,,,तुम तो सदैव मेरे हितों के रक्षक रहे हो !

(हल्का सा रो कर) क्या अब मुझे तुमसे भी आशा छोड़ देनी चाहिए?

(रोना बंद कर के,दिशाओं की और देख कर) हे जगदीश्वर ! हे नारायण ! हे परम सत्य ! मेरा पति ही मुझे छोड़ने और मेरे धर्म से खिलवाड़ करने पर तैयार है तो ऐसे जीवन का क्या प्रायोजन,,,,(एक सिसकी मार कर बैठ जाती है ।

(लक्ष्मण पास आ कर सांत्वना देता है,पीठ पर थपकी दे कर प्यार सेपास बैठता है,उर्मिला के चेहरे के सामने उसकी ठोड़ी उठा कर,आँखों में आँखें डाल कर बोलता है।)

लक्ष्मण -उर्मिले ! तुम स्वयं एक निश्छल धर्म मूर्ति हो। तुम्हें तुम्हारे धर्म से कोई च्युत नहीं कर सकता - मैं भी नहीं ! तुम रघुकुल की सम्मानीय वधु हो यह सत्य भी कोई तुमसे नहीं छीन सकता और ये जो जो कुछ

हो रहा है ये न मैं कर रहा हूँ न राम न राजा दशरथ न कैकेयी माता ,,,ये सब समय की लीला है। इस मृत्यु लोक में सुख केवल ऐसे ही है जैसे कि सावन के आच्छादित आकाश में किसी पल बादल छ जाएँ और कुछ क्षणों के लिए सूर्य नारायण के दर्शन हो जाएँ या किंचित तनिक सी धूप दिख जाये। तुम जैसी उन्नत,बुद्धिमान और धर्मपरायण स्त्री को इस तरह धैर्य नहीं खोना चाहिए।

उर्मिला -(थोड़ा सहज हो कर , ऐसा लगता है कि वहसमझ गयी है। पोस्चर बदल कर ,कटाक्ष में मुस्कुरा कर,एक पॉज़ के बाद बोलती है) जानते हो तुम क्या कह रहे हो ?

लक्ष्मण - क्या?

उर्मिला - तुम ऐसे कह रहे हो जैसे कोई लुटेरा पहले किसी की संपत्ति लूट ले और फिर लुटे हुए को आशीर्वाद दे कि जाओ लक्ष्मीवान भवः !

(इंट्रेस्ट लूज़ करते हुए) जाओ,,,,,,तुम जाओ,,,वन गमन करो,,,,मुझसे अब कुछ मत कहो,,,,जाओ,,,,(पीछे को टर्न करती है, आंसू पोंछती है)

लक्ष्मण उसके पास जाता है । उसे अपनी तरफ मोड़ कर,उसका हाथ थाम कर बोलता है ।

लक्ष्मण - जाता हूँ,,,पर,,,,तुमसे एक वचन चाहिए।

उर्मिला - वचन ??!!,,,सब कुछ छीन भी रहे हो और उस पर वचन भी मांग रहे हो,,,तुम्हें मेरे ऊपर नहीं तो कम से कम अपने ऊपर तो दया आनी चाहिए ! कितने निर्दयी हो सकोगे तुम,,,,तुमसे ऐसी आशा मैं ने कभी नहीं की थी।

लक्ष्मण - तुम्हारा धर्म नहीं छुड़वाऊंगा ,,,,न ही अपना स्वयं का धर्म छोडूंगा,,,यदि मेरा भ्रात्र धर्म है तो मेरा पत्नी धर्म भी है। मैं दोनों निभाउंगा। मैं भी मर्यादाओं से घिरा बंधा हूँ।

उर्मिला - कहो,,,क्या वचन चाहिए तुम्हें मुझसे ?

लक्ष्मण - बैठो।

उर्मिला - मैं ठीक हूँ !,,,,कहो,,,

लक्ष्मण - (खड़ा होता है,उर्मिला को फेस करता है) ,,,एक ! कभी अपनी आँखों में आंसू न लाना !

उर्मिला - रुला कर कहते होआँखों में आंसू न लाना ! (कटाक्ष में हंसती है) अच्छा !,,,,,इसका वचन चाहिए तुम्हें !,,,,,तुमको वन में जा कर मुझसे दूर हो कर क्या स्वप्न में भी मेरी याद नहीं आएगी ?,,क्या तब तुम्हें

विरह या वियोग की अनुभूति नहीं होगी ? रात जब कहीं सर टिका कर आकाश निहारते निहारते निद्रा की गोद में जाओगे तब क्या मेरी याद न आएगी?

लक्ष्मण - मै ने प्रण किया है,,,मै चौदह वर्षों तक निद्रा त्याग करूंगा !

उर्मिला -(अचंभित) निद्रा त्याग?,,,तुम चौदह वर्षों तक सोओगे नहीं ,,,जागोगे ?

लक्ष्मण -हाँ ! जागूँगा नहीं तो सीतामैया और भ्राता राम की रक्षा,देखभाल कौन करेगा,,,,,इसीलिए तो मै उनके साथ वन में जा रहा हूँ !

उर्मिला - ओह !,,अच्छा,,,,

लक्ष्मण - और मै तुम्हें वरदान देता हूँ कि इन चौदह वर्षों तक तुम सोती रहो,,,ताकि तुम्हें विरह, वियोग या किसीप्रकार के विषाद की अनभूति न हो,,,

उर्मिला - (सोचकर, छोटे से पॉज़ के बाद ,,, ज़ोर से हंसती है) कितने सुहाने और बचकाने हैं तुम्हारे तर्क ! तुम चौदह वर्षों तक जागोगे ताकि राम और सीता आराम से सो सकें। ताकि तुम्हें स्वप्न में भी मेरी याद न आये,,,,,,,और मैं ,,,,मैं चौदह वर्षों तक सोती रहूँ ताकि तुम्हारे प्रेम,संसर्ग,संयोग,सम्बन्ध और प्रणय के सपनों में खोई रहूँ,,,,और उस समय तुम्हें पास न पा कर तुम्हारे वियोग में तड़पती रहूँ,अपने को धिक्कारती रहूँ- मगर फिर भी आंसू न बहा सकूं ,रो न सकूं,अपनी व्यथा न किसी से कह सकूं न स्वयं ही उसे नीर बहा कर शांत कर सकूं !

लक्ष्मण -तुम्हें न विरह सताएगा न वियोग,,,और चौदह वर्ष तो तुम देखना यों ही व्यतीत हो जायेंगे।

उर्मिला - हाँ ! चौदह वर्ष क्या होते हैं,,,एक दो पल की ही तो बात है,,,बस गए और आये,,,,

लक्ष्मण- माता कौशिल्या भी तो तुम्हारी ही ज़िम्मेदारी हैं।

उर्मिला - तो क्या वे राजा दशरथ की ज़िम्मेदारी नहीं हैं ?

लक्ष्मण - राजा दशरथ बहुत आहत हुए भूमि पर पड़े हैं,,,वे माता कैकेयी से अब भी अपने सवाल के वापस लेने को आशान्वित हैं ,,,

उर्मिला - तो क्या माता कैकेयी अपना माँगा हुआ वर पलटेंगीं ?

लक्ष्मण -लगता नहीं है,,,,और तब शायद पिताजी की हालत और न बिगड़ जाये ,,,

उर्मिला -एक राजगद्दी को ले कर सारा परिवार एकदम उलट पुलट हो गया है ! (छोटा सा पॉज़) यदि राजा दशरथ को कुछ हुआ तो माता कौशिल्या की देखभाल,,,

लक्ष्मण - (बात काट कर) वो भी तुम कर सकोगी,,यह भी मेरा वरदान है। इससे तुम, माता कौशिल्या और सम्पूर्ण रघुकुल संभल जायेगा,,,और इन परिस्थितियों में रघुकुल को सँभालने,पोसने वाली एक तुम ही हो,,,केवल तुम ही,,,,,चौदह वर्ष रघुकुल रघुकुल हो कर रहेगा तो तुम्हारे ही कारण, तुम्हारे ही बूते, तुम्हारे ही धर्म और साहस के कारण !,,,रघुकुल की नींव अब तुम्हारे हवाले है उर्मिला !

उर्मिला - (हिस्टेरिक्ली हंसती है) हा हा हा हा हा,,,,

लक्ष्मण - इस हंसी का मतलब ?

उर्मिला - हा हा ,,,(हंसी को कंट्रोल करते हुए),,हंसी का मतलब ? (सहज होते हुए) वो तो मैं भी नहीं जानती !

लक्ष्मण - तो फिर ?

उर्मिला - लेकिन क्या मज़ाक़ है लक्ष्मण ,,राम सीता के हवाले हैं,राम और सीता दोनों तुम्हारे हवाले हैं। रघुकुल जिसमें इतने लोग हैं वह मेरे हवाले है,,,,हं हं हं हं ,,,कितना अच्छा लगता है सुनकर कि एक पूरे कुल को सँभालने की ज़िम्मेदारी मेरे अकेले की है,,और वह भी एक दो दिन नहीं,एक दो वर्ष नहीं,,,,पूरे चौदह वर्ष,,,अकेले !

लक्ष्मण - ऐसा न सोचा था न कभी भान था,,लेकिन समय की गति कौन टाल सकता है,,,,

उर्मिला - समय, विधान ,लेखा, प्रारब्ध,कर्म,,,क्यों अपने आप को झुठलाते हो लक्ष्मण ! राम की देखभाल के लिए उनके साथ वन-गमन का इरादा तुम्हारा है। ये तुम पर किसी ने लादा नहीं है। और मुझे यहाँ अकेले छोड़ कर जाने का इरादा भी तुम्हारा ही है,,वो न मेरा है न किसी ने तुम्हें ऐसा करने का सुझाव ही दिया है। अपनी बात को प्रारब्ध और समय की आड़ में धकेलने का प्रयास मत करो।

लक्ष्मण - (कुछ जवाब नहीं सूझता)

उर्मिला -(पल्लू से आँखों के कोनों को पोंछ कर,अपने आप को सँभालते हुए),,,खैर,,,चलो,,,इस समय मुझे अपनी बड़ी बहन सीता से मिलने जाना चाहिए (लक्ष्मण की ओर) तुम चलोगे ? (पॉज़) छोड़ो,,,,तुम अभी जा कर क्या करोगे,,,,तुम तो उनके साथ जा ही रहे हो "चौदह वर्षों" के लिए (चौदह वर्षों पर ज़ोर दे कर)।

लक्ष्मण - तुम मिल आओ,,,,,मैं अपने जाने की तैयारी करता हूँ।

फेड आउट

उपयुक्त संगीत से क्रॉस फेड

(सीता के महल का कमरा। सीता अपने कपडे,साड़ियां इत्यादि बक्से में रखवा रही है। राम वहां नहीं है। उर्मिला आ कर आहिस्ता से सीता के हाथ पकड़ कर दबाती है। फिर उसकी आँखों में देखती हुई उसके साथ बैठती है।)

उर्मिला - (साड़ियां देख कर) ये क्या कर रही हो ? इतने वस्त्र ,इतने आभूषण ,इतने साजो सिंगार के साधन ,,,,

सीता - कुछ तो साथ रख लूँ,,,

उर्मिला - सुनती हूँ वन गमन आदेश हुआ है।

सीता - राम को हुआ है,,,,राजा धिराज दशरथ को वचन निभाना है,,,

उर्मिला - राम को हुआ है,,,तो तुम क्यों जा रही हो ?

सीता - क्योंकि मैं राम की पत्नी हूँ,,,,और पत्नी का धर्म पति के साथ बंधा है।

उर्मिला- भाग्यवान हो जोअपना धर्म निभा सकती हो।

सीता - क्या मतलब?

उर्मिला - यही कि तुम भाग्यवान हो,,अपने पति के साथ जा सकती हो।

सीता - लक्ष्मण को कितना समझाया हमारे साथ मत चलो,,,चल कर क्या करोगे,,,यहाँ कौन देखेगा,,,लेकिन वे मानते ही नहीं,,,खैर,,इसका मतलब तुम भी चलोगी न हमारे साथ ?

उर्मिला -(व्यंग्यात्मक हंसी के साथ) तुम्हारे जैसा भाग्य नहीं है मेरा।

सीता - क्या मतलब ?

उर्मिला - लक्ष्मण मुझे साथ नहीं ले जाना चाहते,,,

सीता - (काम छोड़ कर, स्तब्ध) ओह !,,,(फिर जैसे होश में आ कर) लेकिन ठीक भी है,,,,तुम वन वन हमारे साथ भटकोगी,,,,न कोई काम होगा,न मनोरंजन होगा,न कोई अपना होगा,,,,,न जाने कहाँ रहना पड़े,न जाने

कहाँ सोना पड़े,,,,जाने कैसा मौसम हो,,,लक्ष्मण ठीक कह रहे हैं,,,,तुम यहीं रहो। इतना कठिन जीवन सभी लोग एक साथ क्यों जियें,,,फिर यहाँ भी तो कोई चाहिए ,,,,

उर्मिला - यही तो वे भी कह रहे हैं,,कि यहाँ रहो,,,माता कौशिल्या को तुम्हारी आवश्यकता है।

सीता - माता को ही नहीं,राजा दशरथ को और और माताओं को, रघुकुल के सभी सदस्यों को और अयोध्या की जनता को,,,कौन देखेगा इन्हें ? कौन सहारा देगा इन्हें ? (उर्मिला को कन्धों से पकड़ कर) ये काम तुम्हारे अतिरिक्त किसी और के बस का नहीं है उर्मिले !

उर्मिला -मेरी समझ में कुछ नहीं आता ! यही तुम कहती हो, यही वो कहते हैं,,,,,ऊपर से मुझसे न रोने का वचन मांगते हैं और वरदान देते हैं कि मैं चौदह वर्षों तक निद्रामय रहूँ ,,,,, सोती रहूँ ! ,,,सेवा भी करूँ और सोती भी रहूँ - कितना वरोधाभास है !

सीता - विरोधाभास नहीं विधान है,,,लक्ष्मण ने तुम्हें सुषुप्ति का वरदान दिया है उसके आने वाले समय में क्या परिणाम निकलें क्या पता,,,लेकिन तुम मेरी प्रिय बहन और सखी हो ,,एक वरदान मैं भी तुम्हें देती हूँ जिससे तुम्हारी सारी शंकाएं दूर हो जायेंगीं,,,तुम्हें मैं वरदान देती हूँ कि तुम एक साथ तीन तीन काम कर सकोगी। तुम सोओगी भी ,सेवा भी कर सकोगीऔर प्रजा की देखभाल भी कर सकोगी।

उर्मिला - (झुक कर, भावुक हो कर) आशीर्वाद दो ! मेरी वृहद भ्रात्रि ! आशीर्वाद दो कि मैं इन सारे उत्तरदायित्यों पर खरी उतर सकूं !

(सीता उर्मिला को सर से पकड़ कर गले लगाती है)

फेड आउट लाइट्स।

संगीत क्रेसेंडो पर।

फेड इन।

अयोध्या राज महल के एक हिस्से के बैकड्रॉप पर।

दरवाज़े पर लोगों की भीड़ खड़ी है- खामोश, हाथ बाँधे, दुखी,,,,अंदर से कहीं दर्द की कराह आ रही है- जो दशरथ की है।

दशरथ की आवाज़ -(कराह) राम ! हा राम ! मेरे राम ।,,,,, तुम कुछ और मांग लो,,,राम का वनवास न माँगो,,कैकेयी !,,,सुनो तो,,,देखो,,,(अचानक,जैसे आखिरी बार कह रहे हों),,राम !,,,राम !

लोग जो खामोश खड़े थे, रोने लगते है।

मेलेन्कोलिक संगीत।

फेड तो ब्लैक। क्रॉस फेड विथ हल्का सॉफ्ट संगीत।

फेड इन।

राज महल का माहौल, बैकग्राउंड से चमकदार /बीम्स में आती हुई लाइट्स।

Urmila with wide open eyes, wandering around, music takes over, a few dancer appear and surround her, the music and the movements increase pace, movements enhance, become louder an sharper.

The backdrop is different cut outs (or screen projections) of Raj Mahal.

Urmila with her dance like movements- show that she is helping an elderly lady (Kaushilya) who blesses her. Urmila deals with serants/staff etc and while all this her eyes are wide open but not SEEING anything. Her dance steps are very agile, alert and measured . Gradually the stage is full of dancers around the main dancer- Urmila ! This is a choreographed piece which menifests the mental, social and physical state of Urmila. Done with appropriate music.

The words during the sequence are –sapt swar-(sa re ga ma…), classical alaaps of relevant ragas (or mixed ones) and mixed or interspersed with the following lyrics-

चिर निद्रा और जागृत नयना,

युगों युगों की विरह वेदना,

लेखा कौन करम का विधना !

Fade out.

Music dies down.

All black. Total silence.

A disturbing music begins somewhere far away increases and, as if, comes nearer. Grows louder. Mix this with the music, Fx of war .

SFx of humans fighting with swords, fists, arrows, Chariots breaking, horses neighing, fire works and so on.

Open the curtains and show the war of Lanka in dramatic lighting.

वानर सेना राक्षसों से लड़ रही है। रथ पर चढ़ कर बड़े अहंकार के साथ मेघनाद आता है।

मेघनाद - हा हा हा हा ,,,,,ये अधनंगे बन्दर मुझसे लड़ेंगे !!,,,,,,हा हा हा हा ,,,मैं मेघनाद हूँ,,,है कोई जो मुझे परास्त कर सके ?,,,,,हा हा हा हा ,,,,,

लक्ष्मण – (तीर चढ़ा कर) मत अहंकार कर मेघनाद,,,मेरा नाम लक्ष्मण है,,,तेरी मृत्यु मेरे हाथों लिखी है।

मेघनाद -हा हा हा हा ,,,,,(दीवानों की तरह हँसता है) हा हा हा हा ,,कर बच्चे, प्रयत्न कर,,प्रयत्न कर,,,,

मेघनाद और लक्ष्मण भिड़ जाते हैं। संगीत और तेज़ हो जाता है,वानरों और लड़ने वालों की भीड़ लक्ष्मण और मेघनाद को लगभग छुपा लेती है। फिर कुछ देर बाद चीत्कार की आवाज़ के साथ आस पास के योद्धा छटते हैं और साफ़ दिखाई देता है कि लक्ष्मण ने मेघनाद को मार डाला है।

स्टेज के एक किनारे से भागती हुई,विलाप करती हुई मेघनाद की पत्नी आती है। मेघनाद को मरा देख कर लक्ष्मण की ओर देखती है।

लक्ष्मण - बहुत अहंकार था इसे,,,कहता था कोई इसे मार नहीं सकता।

मेघनाद पत्नी -अहंकार नहीं ,,,सत्य था,,,वो ठीक कहते थे,,,मेघनाद को कोई मार नहीं सकता था।

लक्ष्मण - हुँ ह ! मैं राम का भाई हूँ,,,मैं सक्षम हूँ,,मैं लक्ष्मण हूँ,,,मुझसे कौन जीत सकता है !

मेघनाद पत्नी - मत अहंकार करो सुमित्रा नंदन लक्ष्मण ! ये तुमने मेरे पति मेघनाद को नहीं मारा है,,,तुम में क्या तुम्हारे जैसे किसी में भी न ये सहस है न क्षमता है कि तुम मेरे मेघनाद का वध कर सको ,,,,

लक्ष्मण - अच्छा ! ,,,मार तो दिया न मैं ने !

मेघनाद पत्नी - मेघनाद को वरदान था,,,इसे वही मार सकता था जो चौदह वर्षों तक जागा हो,,,चौदह वर्षों तक जिसकी आँख न लगी हो,,,और ये तुम्हारे लिए संभव इसलिए हुआ कि तुम्हारी पत्नी ने तुम्हारी जगह सोते रहने का वरदान ले लिया और तुम्हें जागते रहने का सौभाग्य दे दिया,,,,इसलिए अहंकार मत करो,,,,तुमने मेघनाद को नहीं मारा है,उसकी मृत्यु तुम्हारी पत्नी उर्मिला के प्रताप से हुई है ! नहीं तो तुम्हरे लिए तो मेघनाद का वध संभव ही नहीं था। ,,,,,महिलाओं के बलिदान में बहुत बल होता है सुमित्रा नंदन ,,,, बहुत बल होता है !

लक्ष्मण खामोश। मेघनाद का शरीर पड़ा है। उसकी पत्नी विलाप करती है। लोग मृत शरीर उठा कर ले जाते हैं। पत्नी पीछे पीछे जाती है।

घमासान लड़ाई के इफेक्ट्स और संगीत

तमाम लोग एक दूसरे से गुत्थम गुत्था करते हुए, टॉप हार्ड लाइट्स , सिवाय सरों के और कुछ ख़ास दिखता नहीं।

लोगों की चीत्कार।

एक महिला स्वर- हा रावण राज ! ,,,,,हा रावण ,,,,(विलाप)

Cacophony subsides . Stage gets cleared of so mny people . only smoke – initially magenta which gradally turns white.

आवाज़-लक्ष्मण !

आवाज़- आज्ञा दें राम !

आवाज़- युद्ध समाप्त हुआ,,,जाओ जाकर सीता को ले आओ !

Music changes to a pleasant one, A few-male and female dancers- appear on stage. Lighting gets mello and soothing. A winning and happy mood prevails. Chroegraph with the following lyrics :

सीता संग फिर पुष्पक पर बैठ चले रघुराई,

संग संग सब संगी, साथी ,सेना, प्रजा समाई ,

चौदह वर्ष सम्पूर्ण हुए तब मिले भरत राम दोई भाई ,

उल्का दान किया पितरन को ,दीवाली मनवाई,

राम राज कहते हैं जिसको सो लाये रघुराई !

Dancers gradually disappear.

Music continues, lights change.

Curtains close.

Music cross fades with mellow and soft one-almost like a fill.

जब पर्दा खुलता है तो हम महल के अंदर का हिस्सा देखते है। लक्ष्मण महल में लौट आया हैं और उर्मिला को तलाश करते हुए आ रहा है।

लक्ष्मण - उर्मिला,,,,,उर्मिला,,,,

लक्ष्मण वहां आता है जहाँ उर्मिला सोइ पड़ी है। उसके बग़ल में बैठता है,हाथ माथे पर फेर कर जगाता है।

लक्ष्मण - उर्मिला ! उठो ! मेरी और तुम्हारी प्रतिज्ञा समाप्त हुई।

उर्मिला -(आँख मलते , उठते हुए),,प्रतिज्ञा समाप्त हुई ?,,,,और दायित्व ? दायित्व भी समाप्त हुआ ?

लक्ष्मण - हाँ,,,हम दोनों का दायित्व भी समाप्त हुआ।

उर्मिला - तो अब तुम आ गए हो,,,,अब फिर तो नहीं जाओगे ?

लक्ष्मण -अब क्या जाना और कहाँ जाना,,,,अब मैं यहीं हूँ,,,तुम्हारे पास !

उर्मिला - तो क्या अब तुम भी मेरी अग्नि परीक्षा लोगे ?

लक्ष्मण - अग्नि परीक्षा?,,,तुम्हारी?,,,,,क्यों ?

उर्मिला - क्या पता ! तुम रघुकुल वासियों को क्याजाने अपनी पत्नियों पर या तो विश्वास नहीं है या फिर स्वयं पर विश्वास नहीं है ,,,,,,,राम को देखो उन्होंने बेचारी अबला सीता देवी की अग्नि परीक्षा ले डाली !

लक्ष्मण - सीता जी रावण के यहाँ अकेली रही थीं,,,

उर्मिला – तो ? ,,,मैं भी तो यहाँ इतने लोगों के बीच अकेली रही थी,,

लक्ष्मण -राम ने जो किया सोच समझ कर किया। पहले वन में प्रवेश करते समय उन्होंने असली सीता को अग्नि के हवाले सुरक्षित कर दिया था,,,,रावण और जो जो कुछ घटा वह सब मायावी सीता केसाथ हुआ। लंका की अग्नि परीक्षा असल सीता को असल रूप में लाने का काम था।

उर्मिला - और अब तो सुनती हूँ राम सीता को त्यागने का मन बना रहे हैं।

लक्ष्मण मुंह फेर लेता है, जब उर्मिला बोलना आरम्भ करती है तब उसकी ओर देखता है।

उर्मिला - वो राम जो सीता को ढूंढने के लिए आंसू बहाते रहे, उसके लिए सेतु बनाते रहे,सेना इकट्ठी करते रहे,रावण से युद्ध रचते रहे,,,वो सीता को त्याग रहे हैं !,,,उस सीताको जो उनकी सेवा करने वन वन भटकी,कंकड़ पत्थरों पर सोइ,रावण के यहाँ राक्षसों के बीच रह कर भी राम राम रटती रही,जिसने रावण का स्वर्णद्वीप की रानी बनाये जाने का प्रस्ताव ठुकरा दिया,,,उस सीता को,,,उस सीता को राम त्याग रहे हैं,,और वो सीता है की सब कुछ सहे जा रही है !

(पॉज़)

कभी पूछना राम से ,,,,

कैसा लगता अगर सीता ने त्यागा होता उनको?

तब क्या जग पुरुषोत्तम कह पता उनको ?

संगीत।

लक्ष्मण -त्याग तो मैं भी दिया गया हूँ।

उर्मिला - (कटाक्ष की हंसी हंस कर) तुम ? तुम कौन से रावण के यहाँ अकेले रहे थे ?

लक्ष्मण - भ्राता राम के यहाँ एकांत में एक वार्ता चल रहीथी। किसी का भी अंदर जाना मना था। फिर एक महात्मा जी पधारे जिन्होंने रामसे मिलने का अनुरोध किया। मैं ने कहा ठहरिये तो वे मुझे ही श्राप देने लगे और मुझे मजबूर कर दिया कि मैं उनके आने की सूचना राम को तत्काल दूँ। अंदर जाता तो मृत्यु दंड मिलता,बाहर रहता तो भी मृत्यु सामान पाप का भागी होता,,,पर जाना पड़ा ! मैं गया !,,,,तो मृत्यु दंड तो नहीं लेकिन सम्बन्ध-विच्छेद का भागी हुआ,,,,जो कि मृत्यु दंड जैसा ही है। ,,,,, तो मैं तो स्वयं ही निष्कासित हूँ। अब मेरा तुम्हारे सिवाए यहाँ क्या है ? अब मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ ।

उर्मिला - अच्छा !,,,कैसी रीति है रघुकुल की सुमित्रा नंदन !,,,जो जीवन वार देता है वहीसम्बन्धों से विच्छेदित हो जाता है,निष्कासित हो जाता है, त्याग दिया जाता है,,,,,,! घोर अपना होते हुए भी ठेठ पराया हो जाता है। फिर भी यह मर्यादा में आता है और अनुकरणीय आचरण है !

लक्ष्मण - जो समझ में न आये,जिसके सन्दर्भ में हम पूर्णतयः अवगत न हों,जिसकी जानकारी हमें सम्पूर्ण रूप से न हो उस बारे में क्या विवेचना करना,,,,! बातें स्थूल होती हैं, सामयिक होती हैं,मन की होती हैं,समाज की मर्यादा की होती हैं और राजा के लिए स्वयं नहीं समाज और प्रजा महत्वपूर्ण होते हैं ! राजा वो करता हैजिससे उसकी प्रजा और आने वाले युगों युगों के लोगों को प्रेरणा और शिक्षा मिले !

उर्मिला - (जम्हाई लेती है),,बहुत ज्ञान अर्जित किया है तुमने,,,,,(हंस कर) इन चौदह वर्षों में !,,,,,,चलो,,,,,आओ,,,,

(लक्ष्मण को ले कर स्टेज के सामने की और आ कर फिर पीछे की ओर चलती है)

अब तुम भी मर्यादाओं से और प्रतिज्ञाओं से छूटे हुए होऔरमैं भी,,,,,आओ अब अपनी दुनिया की ओर ध्यान दें,,,

(स्टेज के पीछे दोनों जाते हुए,,,)

आओ चलो महल के बग़ीचे में खिले बसंत का आनंद लें ! जीवन आनंद के सिवा कुछ भी नहीं !

लक्ष्मण - जीवन आनंद के सिवा कुछ भी नहीं !

(डायलॉग समाप्त होने पर एग्जिट कर जाते हैं)

Music grows from subtle to high ,reaches crescendo . Lighting and music denoting spring.

Curtains close,Music ends with a bang.

Credits and Cast.

End of play.